



शहीदी शताब्दी पुस्तक
प्रकाशना श्रृंखला-10



श्री गुरु तेग बहादर जी की बाणी में प्रयुक्त हरियाणवी भाषा के शब्द-जोड़



डॉ. संदीप सिंह

पब्लिकेशन एवं खोज विभाग,
हरियाणा सिक्ख गुरुद्वारा मैनेजमेंट कमेटी,
कुरुक्षेत्र

भेता रहित

©

Haryana Sikh Gurdwara Management Committee,
Kurukshetra

**Sri Guru Teg Bahadur Ji ki Bani mein Paryukt
Haryanvi Bhasha ke Shabad-jod
(Hindi)**

Writer:

**Dr. Sandeep Singh
In-charge**

**Department of Publication & Research,
Haryana Sikh Gurdwara Management Committee,
Kurukshetra**

**Research Associate:
Bhai Gurdas Singh**

**Typing Work:
Satnam Singh**

**First Edition November 2025
4,000**

Printer: Tejas Printers, Patiala

**Published by Department of Publication & Research,
Haryana Sikh Gurdwara Management Committee,
Kurukshetra**

प्रवेशिका

नौवें पातशाह जी की पावन बाणी, संपूर्ण मानवता को परमार्थ का ज्ञान प्रदान करने वाला एक दिव्य खजाना है, जो मनुष्य के लिए रुहानी मार्गदर्शन का कार्य कर रही है। मनुष्य को अकाल पुरख से मिलाप का मार्ग दिखाने वाली यह पवित्र बाणी, विभिन्न पहलुओं को भी रूपमान करती है, जिनमें अध्यात्म और साहित्य के अनेक विषय प्रकट होते हैं।

श्री गुरु तेग बहादुर जी और उनके साथ शहीद होने वाले महान गुरसिक्खों के 350वें शहीदी दिवस पर हरियाणा सिक्ख गुरुद्वारा मैनेजमेंट कमेटी के 'पब्लिकेशन एवं खोज विभाग' द्वारा गुरु साहिब की बाणी में मौजूद हरियाणवी भाषा के शब्द-जोड़ों से संबंधित एक शोध भरपूर ट्रैक्ट तैयार किया गया है। विभाग के इंचार्ज डॉ. संदीप सिंह का यह कार्य अपने आप में एक महत्वपूर्ण कार्य है, क्योंकि गुरु साहिब की बाणी में से इस विषय पर यह संभवतः पहला कार्य है। आशा है कि श्री गुरु तेग बहादुर जी की अनुपम शहादत को समर्पित, हरियाणा सिक्ख गुरुद्वारा मैनेजमेंट कमेटी के इस श्रद्धांजलि रूप प्रयास को साध-संगत पूर्ण सहयोग प्रदान करेगी।

जथेदार जगदीश सिंह झींडा

प्रधान

हरियाणा सिक्ख गुरुद्वारा मैनेजमेंट कमेटी

कुरुक्षेत्र।

गुरु तेग बहादर जी सिक्ख धर्म के नौवें गुरु हुए हैं जिन्होंने धार्मिक स्वतंत्रता और मानवीय अधिकारों के लिए अपनी बेमिसाल शहादत दी। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में गुरु साहिब जी के 59 शब्द और 57 श्लोक शामिल हैं। उनकी बाणी न केवल सांसारिक मोह-माया में फंसे मानव को भौतिक संसार की वास्तविकता दिखाकर परमार्थ से जोड़ती है, बल्कि इसमें साहित्यिक पक्ष- जैसे काव्य कला, प्रतीक, अलंकार, भाषा आदि भी प्रकट होते हैं। गुरु साहिब की बाणी में कई क्षेत्रीय भाषाओं के प्रचलित शब्द-जोड़ों की उपस्थिति भी देखने को मिलती है। गुरु तेग बहादर जी ने अपने गुरु काल का अधिकांश समय तत्कालीन पंजाब के मालवा, बांगर और पूर्वी भारत की प्रचार यात्राओं में बिताया। यही कारण है कि उनकी बाणी में मलवई, हरियाणवी, अवधी, भोजपुरी आदि क्षेत्रीय भाषाओं के ठेठ शब्द-जोड़ प्राप्त होते हैं।

इस पुस्तिका का उद्देश्य श्री गुरु तेग बहादर जी की बाणी में प्रयुक्त हरियाणवी भाषा के शब्द-जोड़ों को सामने लाना है। 'हरियाणवी' शब्द हरियाणा प्रदेश के निवासियों तथा उनके द्वारा बोली जाने वाली भाषा के लिए प्रयोग किया जाता है, जिसकी उत्पत्ति 'हरियाणा' के साथ 'वी' प्रत्यय जोड़ने से हुई है। समय-समय पर विभिन्न विद्वानों ने हरियाणवी को भिन्न-भिन्न नामों से अभिहित किया है, जिनमें बांगरू, कौरवी, दक्षिणी हिन्दी, जाटू, खड़ी बोली आदि प्रमुख हैं। हरियाणा राजनीतिक मानचित्र पर सन् 1966 ई० को आया है, अतः इससे पूर्व इस तरह के नामकरण स्वाभाविक हैं।¹ हरियाणवी

¹ रघुबीर सिंह मथाना और डॉ. बाबू राम, हरियाणवी साहित्य का इतिहास, लक्ष्मण साहित्य प्रकाशन, रोहतक, 2004, पृष्ठ 10

भाषा के विद्वानों के अनुसार² एक समय में साहित्यिक भाषा रह चुकी 'ब्रज' और एक लम्बे समय तक राज-काज की भाषा रह चुकी 'उर्दू' का निर्माण हरियाणवी तथा इसकी उप-बोलियों से हुआ है और आज के समय देश की राष्ट्रीय भाषा हिन्दी, हरियाणवी भाषा का शहरी रूप है।

हरियाणवी का क्षेत्र हरियाणा राज्य के अतिरिक्त उसके समीवर्ती क्षेत्र भी हैं। दिल्ली जिस समय 1911 ई. में ब्रिटिश सरकार ने भारत की राजधानी बनाई, तो दिल्ली शहर के अतिरिक्त चारों दिशाओं के गांव सुरक्षा की दृष्टि से दिल्ली प्रान्त में ही रखे गए। इन ग्रामीण क्षेत्रों की बोली हरियाणवी ही है, जिसे देसी, देहाती या ऊंची बोली कहा जाता है। यही नाम हरियाणवी का भी पर्याय है। उधर यमुना पर मेरठ तक हरियाणवी की कौरवी बोली का वर्चस्व है। हरियाणवी से सटे राजस्थानी क्षेत्र भरतपुर तक हरियाणवी का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।³

क्षेत्रीय विभाजन के अनुसार हरियाणवी भाषा की छह उप-भाषाएँ मानी जाती हैं: बांगरू, कौरवी, अहीरवाटी, मेवाती, बागड़ी और ब्रज। गुरु साहिब की बाणी में मौजूद हरियाणवी भाषा के शब्द-जोड़ों में से अधिकांश बांगरू और ब्रज उप-भाषाओं से संबंधित हैं। कुछ शब्द तत्सम या तद्भव रूप में अहीरवाटी और कौरवी उप-भाषाओं से भी हैं। गुरु साहिब की बाणी की मुख्य भाषा साधुक्कड़ी या साधु भाषा और ब्रज भाषा को माना जाता है, जो हरियाणवी भाषा की उप-भाषा होने के साथ-साथ पश्चिमी उत्तर प्रदेश के मथुरा, वृंदावन, ब्रज आदि क्षेत्रों में बोली जाने वाली भाषा है।

² रघुबीर सिंह मथाना और डॉ. बाबू राम, हरियाणवी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ 17

³ वही, पृष्ठ 19-20

पंजाबी और हरियाणवी भाषा के शब्द-जोड़ों में यह उल्लेखनीय है कि पंजाबी भाषा में कई शब्द-जोड़ों में प्रयुक्त होने वाली 'लां' मात्रा हरियाणवी भाषा में 'दुलावां' रूप में बदल जाती है, जबकि शब्द का मूल रूप वही रहता है। उदाहरण के लिए, पंजाबी के शब्द जैसे 'आवे', 'जावे', 'समझावे', 'तेरे', 'करे', 'भरोसे' आदि हरियाणवी में 'आवै', 'जावै', 'समझावै', 'तेरै', 'करै', 'भरोसै' में बदल जाते हैं। गुरु जी की बाणी में प्रयुक्त हरियाणवी भाषा के समस्त शब्द-जोड़ों को चार भागों में विभाजित किया जा सकता है:

1. हरियाणवी भाषा के मूल शब्द: जैसे पावै, भरोसै, चालै, आवै, राखे, तेरै, भाजि आदि।

2. तत्सम और तद्भव शब्द: जैसे दीसै, टेक, माहि, रहै।

3. हरियाणवी भाषा के शब्द जो अन्य भाषाओं (अवधी, हिंदी, राजस्थानी आदि) में भी उसी रूप में प्राप्त होते हैं: जैसे खेलु, मानस, न्यारा, बात, कामि, भीतरि, पांच, का, की आदि।

4. बहुअर्थी शब्द-जोड़: जैसे बार, राम आदि।

गुरु तेग बहादर जी की बाणी में प्रयुक्त हरियाणवी भाषा के शब्द-जोड़ों का अर्थ सहित विवरण, गुरुमुखी अक्षर क्रम के अनुसार निम्नलिखित है:

1. अरु (अर)

- शाब्दिक अर्थ: और

- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: समान योजक के रूप में

जो तन तैं अपनो करि मानिओ अरु सुंदर गृह नारी ॥⁴

⁴ शब्दार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अंग 220

1. आजु (आज)

- शाब्दिक अर्थ: आज

- बाणी में रूप: निश्चयवाचक विशेषण के रूप में

आजु कालि फुनि तोहि ग्रसि है समझि राखिओ चीत ॥⁵

2. आवै

- शाब्दिक अर्थ: आता है

- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: अधीन योजक (शर्त वाचक) रूप
वाले वाक्य में

कहा भइओ तीरथ ब्रत किए राम सरनि नहि **आवै** ॥⁶

3. इन मै

- शाब्दिक अर्थ: इन में

- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: अधिकरण कारक के रूप में

इन मै कछु संगी नही नानक साची जानि ॥⁷

4. एक

- शाब्दिक अर्थ: एक

- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: गणनावचक विशेषण के रूप में

⁵ शब्दार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अंग 220

⁶ वही, अंग 830.

⁷ वही, अंग 1426

कहु नानक इह बिपति मै टेक **एक** रघुनाथ ॥⁸

5. समझावै

- शाब्दिक अर्थ: समझा देता है
- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: कर्म कारक रूप वाले वाक्य में

कोऊ माई भूलिओ मनु **समझावै** ॥⁹

6 . समझै

- शाब्दिक अर्थ: समझता है
- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: निषेधी समान योजक रूप वाले वाक्य में

बिरधि भइओ अजहू नहि **समझै** कौन कुमति उरझाना ॥¹⁰

7 . साची

- शाब्दिक अर्थ: सत्य, सच्ची
- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: भाववाचक संज्ञा के रूप में

कहु नानक वहु मुक्ति नरु इह मन **साची** मानु ॥¹¹

8 . करै

⁸ शब्दार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अंग 1429.

⁹ वही, अंग 219.

¹⁰ वही , अंग 802.

¹¹ वही, अंग 1427.

- शाब्दिक अर्थ: करता है
- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: पुरुषवाचक सर्वनाम (अन्य पुरुष)
रूप वाले वाक्य में

तीरथ करै ब्रत फुनि राखै नह मनूआ बसि जा को ॥¹²

9 . का

- शाब्दिक अर्थ: का
- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: संबंध कारक

नानक बिरदु राम का देखहु अभै दानु तिह दीना ॥¹³

10 . कामि (काम)

- शाब्दिक अर्थ: काम, कार्य
- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: कालवाचक क्रिया विशेषण रूप वाले
वाक्य में

अंत बार नानक बिनु हरि जी कोऊ कामि न आइओ ॥¹⁴

11. कालु (काल)

- शाब्दिक अर्थ: कल
- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: काल-वाचक क्रिया विशेषण के रूप में

¹² शब्दार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अंग 831.

¹³ वही, अंग 902.

¹⁴ वही, अंग 634.

छिनु छिनु करि गइओ कालु जैसे जात आजु है ॥¹⁵

12. की

- शाब्दिक अर्थ: की
- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: संबंध कारक के रूप में

बिरथा कहउ कउन सिउ मन की ॥¹⁶

13. कै

- शाब्दिक अर्थ: गुरु तेग बहादर जी की बाणी में यह शब्द-जोड़ दो अर्थों में प्रयुक्त हुआ है और हरियाणवी भाषा में भी यह शब्द इन्हीं दो अर्थों में प्रयोग होता है:

पहला अर्थ: के, का (संबंध कारक के रूप में)

जा कै सिमरनि दुरमति नासै पावहि पदु निरबाना ॥¹⁷

दूसरा अर्थ: के, जैसे- खा के, नहा के आदि (पूर्व पूर्ण कारदंतक के रूप में)

जानि बूझ कै बावरे तै काजु बिगारिओ ॥¹⁸

14. खेलु (खेल)

- शाब्दिक अर्थ: खेल

¹⁵ शब्दार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अंग 1352

¹⁶ वही, अंग 411.

¹⁷ वही, अंग 901.

¹⁸ वही, अंग 727.

- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: सर्वनामी विशेषण रूप वाले वाक्य में

जन नानक इहु **खेलु** कठनु है किनहूं गुरमुखि जाना ॥¹⁹

15. गातु (गात)

- शाब्दिक अर्थ: शरीर

- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: पुरुषवाचक सर्वनाम (मध्यम पुरुष)
रूप वाले वाक्य में

नानकु जनु कहतु बात बिनसि जैहै तेरो **गातु** ॥²⁰

16. गावै

- शाब्दिक अर्थ: गाता है

- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: कालवाचक क्रिया विशेषण रूप वाले
वाक्य में

कहु नानक सोई नरु सुखीआ राम नाम गुन **गावै** ॥²¹

17. घेरै

-शाब्दिक अर्थ: घेर लेते हैं, चारों ओर इकट्ठा होना

- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: क्रिया के रूप में

सुख मै आनि बहुत मिलि बैठत रहत चहू दिसि **घेरै** ॥²²

¹⁹ शब्दार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अंग 219.

²⁰ वही, अंग 1352.

²¹ वही, अंग 220.

18. चालै

- शाब्दिक अर्थ: जाता है, चलता है
- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: क्रिया के रूप में

संगि तिहारै कछू न **चालै** ताहि कहा लपटानो ॥²³

19. छोडिआ

- शाब्दिक अर्थ: छोड़ दिया
- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: संबंध कारक रूप वाले वाक्य में

राम नाम का सिमरनु **छोडिआ** माया हाथि बिकाना ॥²⁴

20. जानै

- शाब्दिक अर्थ: जानता है
- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: पुरुषवाचक सर्वनाम (अन्य पुरुष)
रूप वाले वाक्य में

अहिनिसि अउध घटै नहि **जानै** भइओ लोभ संगि हउरा ॥²⁵

21. टेक

- शाब्दिक अर्थ: आश्रय, सहारा (हरियाणवी भाषा में टेक शब्द का अर्थ है- रख देना)

²² शब्दार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अंग 634

²³ वही, अंग 1186.

²⁴ वही, अंग 584.

²⁵ वही, अंग 220.

- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: संबंध कारक रूप वाले वाक्य में

कहु नानक इह बिपति मैं **टेक** एक रघुनाथ ॥²⁶

22. ते

-शाब्दिक अर्थ: से / से अलग

-बाणी में रूप: अपादान कारक

तन **ते** प्रान होत जब निआरे टेस्त प्रेति पुकारि ॥²⁷

23. तेरै

- शाब्दिक अर्थ: तेरा, तेरे

- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: पुरुषवाचक सर्वनाम (मध्यम पुरुष)
के रूप में

रामु सिमरि रामु सिमरि इहैं तेरै काजि है ॥²⁸

24. तै

- शाब्दिक अर्थ: तू (इस शब्द का प्रयोग हरियाणा और मालवा के सीमावर्ती क्षेत्रों में होता है।)

- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: पुरुषवाचक सर्वनाम (मध्यम पुरुष)
के रूप में

²⁶ शब्दार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अंग 1429.

²⁷ वही, अंग 536.

²⁸ वही, अंग 1352.

मुकति पंथु जानिओ तै नाहनि धन जोरन कउ धाइआ ॥²⁹

25. दीसै

- शाब्दिक अर्थ: दिखाई देता है, दिखता है (हरियाणवी भाषा में इस शब्द का उच्चारण 'दिखखै' के रूप में होता है।)
- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: पुरुषवाचक सर्वनाम (अन्य पुरुष) रूप वाले वाक्य में

जो दीसै सो सगल बिनासै जिउ बादर की छाई ॥³⁰

26. धरै

- शाब्दिक अर्थ: रखता है
- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: क्रिया के रूप में

तीरथ बरत अरु दान करि मन मै धरै गुमानु ॥³¹

27. निआई

- शाब्दिक अर्थ: जैसे, के समान
- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: सर्वनामी विशेषण के रूप में

सो तुम ही महि बसै निरंतर नानक दरपनि निआई ॥³²

²⁹ शब्दार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अंग 631.

³⁰ वही, अंग 219.

³¹ वही, अंग 1428

³² वही, अंग 703

28. निआरा/ निआरे (न्यारे/न्यारा)

- शाब्दिक अर्थ: अलग, भिन्न
- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: सर्वनामी विशेषण के रूप में
सो स्वामी तुम निकटि पछानो रूप रेख ते **निआरा** ॥³³

दूसरा रूप: अपादान कारक के रूप में
तन ते प्रान होत जब **निआरे** टेरेत प्रेति पुकारि ॥³⁴

29. पांच

- शाब्दिक अर्थ: पाँच
- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: गणनावाचक विशेषण के रूप में
पांच तत को तनु रचिओ जानहु चतुर सुजान ॥³⁵

30. पावै

- शाब्दिक अर्थ: प्राप्त करता है, पाता है
- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: प्रश्नवाचक सर्वनाम रूप वाले वाक्य में

कउनु नामु जगु जा कै सिमरै **पावै** पदु निरबाना ॥³⁶

31. बताई

³³ शब्दार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अंग 703.

³⁴ वही, अंग 536.

³⁵ वही, अंग 1427.

³⁶ वही, अंग 802.

- शाब्दिक अर्थ: बताई है, बता दी है
- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: क्रिया के रूप में

मानस देह पाइ पद हरि भजु नानक बात **बताई** ॥³⁷

32. बतावै

- शाब्दिक अर्थ: बताता है
- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: क्रिया के रूप में

भगति बिना सहसा नह चूकै गुरु इहु भेदु **बतावै** ॥³⁸

33. बंधावै

- शाब्दिक अर्थ: बाँध लेता है, बाँधता रहता है
- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: संबंध कारक रूप वाले वाक्य में

पूत मीत माया ममता सिउ इह बिधि आपु **बंधावै** ॥³⁹

34. बात

- शाब्दिक अर्थ: बात
- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: क्रिया के रूप में

मानस देह पाइ पद हरि भजु नानक **बात** बताई ॥⁴⁰

³⁷ शब्दार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अंग 632.

³⁸ वही, अंग 830.

³⁹ वही, अंग 219

⁴⁰ वही, अंग 632.

35. बार

- शाब्दिक अर्थ: गुरु तेग बहादर जी की बाणी में यह शब्द तीन अर्थों में प्रयुक्त हुआ है और हरियाणवी भाषा में भी यह इन्हीं तीन अर्थों में प्रयोग होता है:

पहला अर्थ: बार-बार, दोबारा

बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: संख्यावाचक क्रिया विशेषण के रूप में

कहउ कहा **बार बार** समझत नह किउ गवार ॥⁴¹

दूसरा अर्थ: देरी

बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: परिमाणवाचक क्रिया विशेषण के रूप में

बिनसत नह लगै **बार** ओरे सम गातु है ॥⁴²

तीसरा अर्थ: वारी (जैसे- इस वारी, अगली वारी)

बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: कालवाचक क्रिया विशेषण के रूप में
अंत **बार** संगि तेरै इहै एकु जातु है ॥⁴³

36. बिनु (बिन)

- शाब्दिक अर्थ: बिना

- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: संबंध कारक रूप वाले वाक्य में

⁴¹ शब्दार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अंग 1352.

⁴² वही, अंग 1352.

⁴³ वही, अंग 1352.

राम नाम **बिनु** मिथिया मानो सगरो इहु संसारा ॥⁴⁴

37. भजनु (भजन)

- शाब्दिक अर्थ: परमात्मा का नाम स्मरण
- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: अधिकरण कारक रूप वाले वाक्य में

जा मै **भजनु** राम को नाही ॥⁴⁵

38. भरै

- शाब्दिक अर्थ: भरता है
- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: क्रिया के रूप में

कर परपंच जगत कौ डहकै अपनो उदरु **भरै** ॥⁴⁶

39. भरोसै

- शाब्दिक अर्थ: भरोसे पर
- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: संबंध कारक रूप वाले वाक्य में

कहु नानक मै इही **भरोसै** गही आनि सरनाई ॥⁴⁷

40. भाई

- शाब्दिक अर्थ: भाई

⁴⁴ शब्दार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अंग 703.

⁴⁵ वही, अंग 831.

⁴⁶ वही, अंग 536.

⁴⁷ वही, अंग 1008.

- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: पुल्लिङ्ग संज्ञा के रूप में

सभ किछु जीवत को बिबहार ॥

मात पिता **भाई** सुत बंधप अरु फुनि गृह की नारि ॥⁴⁸

41. भाजि (भाज)

- शाब्दिक अर्थ: भाग कर

- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: पुरुषवाचक सर्वनाम (मध्यम पुरुष)
रूप वाले वाक्य में

कालु तउ पहुँचिओ आनि कहा जैहै **भाजि** रे ॥⁴⁹

42. भीतरि (भीतर)

- शाब्दिक अर्थ: अंदर

- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: अधिकरण कारक के रूप में

रतनु रामु घट ही के **भीतरि** ता को ग्यानु न पाइओ ॥⁵⁰

43. माहि

- शाब्दिक अर्थ: में

- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: अधिकरण कारक के रूप में

मन की मन ही **माहि** रही ॥⁵¹

⁴⁸ शब्दार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अंग 536.

⁴⁹ वही, अंग 1352.

⁵⁰ वही, अंग 703.

44. मान/मानि

- शाब्दिक अर्थ: मान ले
- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: कारणवाचक क्रिया विशेषण रूप वाले वाक्य में

अउसरु बीतिओ जातु है कहिओ **मान** लै मेरो ॥⁵²

45 . मानी

- शाब्दिक अर्थ: मानी है / मान ली है
- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: अपादान कारक के रूप में:

जो संपति अपनी करि **मानी** छिन महि भई पराई ॥⁵³

46. मानस

- शाब्दिक अर्थ: मनुष्य
- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: संबंधवाचक सर्वनाम रूप वाले वाक्य में

मानस जनमु दीओ जिह ठाकुरि सो तै किउ बिसराइओ ॥⁵⁴

47. मानै

⁵¹ शब्दार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अंग 631.

⁵² वही, अंग 727.

⁵³ वही, अंग 1008.

⁵⁴ वही, अंग 802.

- शाब्दिक अर्थ: मानता है, मान लेता है
- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: निषेधी समान योजक रूप वाले वाक्य में

इकि बिनसै इक असथिरु **मानै** अचरजु लखिओ न जाई ॥⁵⁵

48. मैं

- शाब्दिक अर्थ: मैं
- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: अधिकरण कारक के रूप में

जगत **मै** झूठी देखी प्रीति ॥⁵⁶

49. या

- शाब्दिक अर्थ: इस (हरियाणवी भाषा में यह शब्द 'यह' के अर्थ में प्रयोग होता है।)
- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: अधिकरण कारक रूप वाले वाक्य में

या जग महि कोऊ रहनु न पावै इकि आवहि इकि जाही ॥⁵⁷

50. रहै

- शाब्दिक अर्थ: रहता है (हरियाणवी भाषा में इस शब्द का उच्चारण 'रहै' के रूप में होता है।)

⁵⁵ शब्दार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अंग 219.

⁵⁶ वही, अंग 536.

⁵⁷ वही, अंग 1231.

- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: संबंध कारक रूप वाले वाक्य में

जोबनु धनु प्रभता कै मद मैं अहिनिसि **रहै** दिवाना ॥⁵⁸

51. राखि (राख)

- शाब्दिक अर्थ: रख ले, रख लो

- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: संबोधनी कारक रूप वाले वाक्य में

दुर्मति सिउ नानक फधिओ **राखि** लेहु भगवान ॥⁵⁹

52. राखै

- शाब्दिक अर्थ: रखता है

- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: अधीन योजक (शर्त वाचक) रूप वाले वाक्य में

तीरथ करै ब्रत फुनि **राखै** नह मनूआ बसि जा को ॥⁶⁰

53. राम

- शाब्दिक अर्थ: गुरु तेग बहादर जी की बाणी की तरह हरियाणवी भाषा में भी यह शब्द बहुअर्थी रूप में प्रयुक्त हुआ है। हरियाणवी में 'राम' शब्द का प्रयोग परमात्मा और दशरथ पुत्र श्री रामचंद्र के अलावा वर्षा होने

⁵⁸ शब्दार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अंग 685.

⁵⁹ वही, अंग 1428.

⁶⁰ वही, अंग 831.

की क्रिया के लिए भी होता है, जैसे- 'म्हारे गाम
मै राम बरसण लाग रया ।'

गुरु साहिब की बाणी में यह शब्द दो अर्थों में
प्रयुक्त हुआ है:

पहला अर्थ: अकाल पुरख, परमात्मा (कर्ता कारक के रूप में)
साधो रचना **राम बनाई** ॥⁶¹

दूसरा अर्थ: दशरथ पुत्र श्री रामचंद्र (खास संज्ञा पुल्लिंग के रूप
में)

रामु गइओ रावनु गइओ जा कउ बहु परवारु ॥⁶²

54. री

- शाब्दिक अर्थ: नी (स्त्रीवाचक संबोधन)
- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: संबोधनी कारक के रूप में

अब मै कहा करउ **री** माई ॥⁶³

55. रे

- शाब्दिक अर्थ: वे (पुरुषवाचक संबोधन)
- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: संबोधनी कारक के रूप में

मन **रे** कहा भइओ तै बउरा ॥⁶⁴

⁶¹ शब्दार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अंग 219.

⁶² वही, अंग 1429.

⁶³ वही, अंग 1008.

56. लागु (लाग)

- शाब्दिक अर्थ: लग जा, पड़ा रह
- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: संबंध कारक रूप वाले वाक्य में

माया को संगु तियागु प्रभु जू की सरनि **लागु** ॥⁶⁵

57. लागी

- शाब्दिक अर्थ: लगी रहती है, जुड़ी रहती है
- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: संबंध कारक रूप वाले वाक्य में

घर की नारि बहुतु हितु जा सिउ सदा रहत संग **लागी** ॥⁶⁶

58. लागै

- शाब्दिक अर्थ: : लगते हैं, लगता है
- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: अपादान कारक

अपने ही सुख सिउ सब **लागै** किया दारा किया मीत ॥⁶⁷

59. लावै

- शाब्दिक अर्थ: लगाता है
- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: करण कारक रूप वाले वाक्य में

⁶⁴ शब्दार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अंग 220.

⁶⁵ वही, अंग 1352.

⁶⁶ वही, अंग 634.

⁶⁷ वही, अंग 570

अंतरि बाहरि सदा संगि प्रभु ता सिउ नेहु न लावै ॥⁶⁸

60. लोग

- शाब्दिक अर्थ: लोग

- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: गुणवाचक विशेषण रूप वाले वाक्य में

माया कारणि धावही मूरख लोग अजान ॥⁶⁹

61. सरै

-शाब्दिक अर्थ: सफल होता है, पूरा होता है

- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: क्रिया के रूप में

कहु नानक भजु राम नाम नित जा ते काजु सरै ॥⁷⁰

62. सी

-शाब्दिक अर्थ: जैसी, के समान

- बाणी में शब्द-जोड़ का रूप: गुणवाचक विशेषण के रूप में

जिह सिमरत गनका सी उधरी ता को जसु उर धारो ॥⁷¹

⁶⁸ शब्दार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अंग 220.

⁶⁹ वही, अंग 1427.

⁷⁰ वही, अंग 536.

⁷¹ वही, अंग 632.

सार रूप में हम कह सकते हैं कि गुरु तेग बहादर जी ने अपनी बाणी में अधिकांशतः उन शब्दों का प्रयोग किया जो तत्कालीन समय में आम जनमानस द्वारा अपनी भाषा में प्रयुक्त किए जा रहे थे। गुरु साहिब जी की बाणी में प्रयुक्त इन शब्दों में हरियाणवी भाषा के भी अनेकों शब्द-जोड़ भी शामिल हैं। इनमें से अधिकांश शब्द वर्तमान समय में भी उसी प्रकार (कुछ भाषाई परिवर्तनों को छोड़कर) प्रयोग में हैं। गुरु साहिब द्वारा अपनी बाणी में लोक भाषा का प्रयोग करने का उद्देश्य आम जनता तक उस आध्यात्मिक और युग-परिवर्तक संदेश को पहुँचाना था, जिस से वे विद्वतापूर्ण भाषा के बोझ के कारण सदियों से वंचित थे। गुरु तेग बहादर जी की उच्च स्तर की सुबोध शैली वाली बाणी ने 'भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन' के संदेश को घर-घर पहुँचाकर एक अनूठे इन्कलाब की सृजना की।



हरियाणा सिक्ख गुरुद्वारा मैनेजमेंट कमेटी, श्री गुरु तेग बहादर जी और महान गुरसिक्खों- भाई मती दास जी, भाई सती दास जी और भाई दयाला जी के 350वें शहीदी दिवस के ऐतिहासिक अवसर पर उनकी महान शहादत को कोटि-कोटि प्रणाम करती है। गुरु पातशाह के चरणों में अरदास है कि वे हम सभी को विषय-विकारों से मुक्त करके अकाल पुरख का नाम स्मरण करने की बख्शिष प्रदान करें।

गुरु तेग बहादर, धर्म की चादर, दुनिया मै थारा नाम सै प्यारा।
शीश दे कै, दीन धर्म की खातर, काम करया इस जग तै न्यारा।
घणा दुखी जब देस हो रहया था, हिंदू खतरे मै आ रहया था।
औरंगज़ेब धक्के कै गेल्लै, दीन धर्म बदला रहया था।
मालवा बांगर असम बंगाल लग, चरण पाए गुरु तेग बहादर।
ना खुद डरना ना डराना किसे तै, यू पैगाम दीया गुरु तेग बहादर।
बिनती सुन कश्मीरी पंडतां की, शहीदी देण नै चाल पड़े।
तिलक जनेऊ बचाण की खातर, दिल्ली कै आगै अड़ कै खड़े।
शीश दे कै आपणा सतगुरु नै, हिंदू धर्म तब बचा लीया।
औरंगज़ेब की धक्का धर्मी को, सतगुरु नै मिट्टी मै मिला दीया।
गुरु तेग बहादर जे ना शीश देंदे, यू देस ना ईसा देस होंदा।
ना घंटी बाजदी मंदरां मै, ना गीता वेद का उपदेश होंदा।
नशा तंबाकू थामे दूर राखयो, सदा नाम लीयो भगवान का।
दूर रहयो अहंकार निंदा तै, यू उपदेश गुरु के ज्ञान का।
३५० साल हो लीये पूरे, जद शीश दीया गुरु तेग बहादर।
गुरबानी नै पढ़ो अर समझो, जो उपदेश किए गुरु तेग बहादर।
दीना नाथ गुर परम कृपालु, करया मानस पै उपकार।
संदीप सिंह ईब कलम गेल्लै, प्रणाम करै बार बार।

-डॉ. संदीप सिंह

